देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

9 772395 711007

Impact Factor 7.523

ISSN : 2395-7115

नवम्बर 2024

Vol.-20, Issue-5(1)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

वैश्वीकरण के दौर में बदलती सामाजिक व्यवस्था

Guru Nanak Girls College
Sant Pura, Yamuna Nagar

विशेषांक सम्पादक :
डॉ. गीतू खन्ना,
डॉ. अमनदीप कौर

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग
एडवोकेट

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

Scanned with OKEN Scanner

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 20 ISSUE-5(1) (नवम्बर 2024) ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :

चौ. एम. सिहाग

विशेषांक सम्पादक :

डॉ. गीतू खन्ना,

डॉ. अमनदीप कौर

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल', एडवोकेट

एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल-एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
डी.लिट् (मानद उपाधि), काठमांडू, नेपाल
विभागाध्यक्ष हिन्दी एवं शोध निर्देशक
टाँटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर-335001 (राज.)

प्रकाशक :

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

Scanned with OKEN Scanner

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,

भिवानी–127021 (हरियाणा)

Email : nksihag202@gmail.com

मो. 09466532152

Published by :

Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

202, Old Housing Board,

Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA

Email : grsbohal@gmail.com

Facebook.com/bohalshodhmanjusha

Website : www.bohalsm.blogspot.com

WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

<u>*Disclaimer :*</u>

1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

64.	ਵਿਸ਼ਵੀਕਰਨ ਦੇ ਦੌਰ ਵਿਚ ਗੁਰਦਿਆਲ ਸਿੰਘ ਦੇ ਨਾਵਲਾਂ ਦੀ ਪ੍ਰਸੰਗਿਕਤਾ	ਡਾ. ਗੁਰਜਿੰਦਰ ਕੌਰ	341-345
65.	ਸਮਕਾਲੀ ਕਵਿਤਾ ਵਿਚ ਤਿੜਕਦੇ ਅਹਿਸਾਸਾਂ ਦੀ ਪੀੜ ਦਾ ਬਿਆਨ	ਡਾ. ਸੁਖਵਿੰਦਰ ਕੌਰ ਕੰਵਲ	346-350
66.	साहित्य में नारी	डॉ. कर्मजीत कौर	351-354
67.	वैश्वीकरण के दौर में स्त्री-मुक्ति के प्रश्न (विशेष संदर्भ : चित्रा मुद्गल के उपन्यास)	डॉ. अंजना नायक	355-359
68.	ਵਿਸ਼ਵੀਕਰਨ ਵਿੱਚ ਦਲਿਤ ਵਰਗ ਦੀ ਪਛਾਣ	ਸਹਾਇਕਪ੍ਰੋਫੈਸਰਯੋਗਿਤਾ ਚੰਦੇਲ	360-367
69.	ਵਿਸ਼ਵੀਕਰਣ ਦੇ ਸੰਦਰਭ ਵਿੱਚ ਸੰਤ ਬਾਣੀਮਹੱਤਵ	ਸੁਨੀਲ ਕੁਮਾਰ ਨਾਗਰਾ	368-373
70.	सामाजिक चेतना के पोषक : मुनिश्री तरूणसागर	डॉ. अनुभा जैन	374-377
71.	ਵਿਸ਼ਵੀਕਰਨ ਦੇ ਦੌਰ ਵਿਚ ਆਂਚਲਿਕਤਾ ਦੀ ਗੱਲ ਕਰਦਾ ਨਾਵਲ 'ਅੱਧ ਚਾਨਣੀ ਰਾਤ'	ਸਤਵੀਰ ਕੌਰ	378-384
72.	वैश्विक परिदृश्य में आंचलिक उपन्यासों का मूल्यांकन	डॉ. लक्ष्मी गुप्ता	385-388
73.	वैश्वीकरण और हिन्दी उपन्यास साहित्य में अन्तर्सबन्ध	डॉ. धीरेन्द्र सिंह थापा	389-392
74.	वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी साहित्य में चित्रित नारी की दशा	श्रीमती प्रेमलता पाटिल	393-398
75.	वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में वर्णित प्रवास का दर्द	डॉ. प्रवीण कटारिया	399-403
76.	ਵਿਸ਼ਵੀਕਰਨ ਦੇ ਸੰਦਰਤ ਵਿੱਚ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਬਾਣੀ ਦੀ ਮਹੱਤਤਾ	ਹਰਜੀਤ ਕੌਰ	404-410
77.	ਵਿਸ਼ਵੀਕਰਨ ਦੇ ਦੌਰ ਵਿੱਚ ਸਮਾਜਿਕ ਬਦਲਾਅ	ਨੀਤੂ ਸ਼ਰਮਾ	411-416

Scanned with OKEN Scanner

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Nov. 2024 Page No. : 385-388

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैश्विक परिदृश्य में आंचलिक उपन्यासों का मूल्यांकन

डॉ. लक्ष्मी गुप्ता
सहायक प्रवक्ता, गुरूनानक गर्ल्स कॉलेज, यमुनानगर।

साहित्य समाज प्रसूत है। साहित्य की सोद्देश्यता उसके समाज सापेक्ष होने में है। हिन्दी साहित्य के वृहत परिप्रेक्ष्य में उपन्यास साहित्य में आंचलिक उपन्यास के सूत्र प्रेमचंद से प्रारंभ होते हैं। प्रेमचंद ने अपने साहित्य को समाज से जोड़ते हुए यथार्थवादी परंपरा का सूत्रपात किया। प्रेमचन्दोत्तर आंचलिक उपन्यास परंपरा में फणीश्वरनाथ रेणु, नागार्जुन, शिवप्रसाद सिंह, उदयशंकर भट्ट, विवेकी राय, राजेंद्र अवस्थी, रामदरश मिश्र, कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी, उषा प्रियंवदा आदि के नाम के साथ मार्कण्डेय का नाम भी उल्लेखनीय है जिन्होंने ग्रामीण और आंचलिक जीवन को केंद्र में रखकर उपन्यास साहित्य का सृजन किया।

आधुनिक युग की नव्यतर विधाओं के संदर्भ में आंचलिकता एक दिशा की उपलब्धि है। व्यष्टि–सत्य और समष्टि–सत्य का उपन्यासों के धरातल पर दो रूपों में विकास हुआ है। व्यष्टि सत्य को मार्क्स, फ्रायड, एडलर, मुंग, सात्र आदि की वैचारिक भूमिका पर ग्रहण किया गया है, तो समष्टि सत्य की चुनौती को आंचलिकता ने स्वीकार किया। उपन्यास के प्रसंग में अंचल ,आंचलिक तथा आंचलिकता आदि शब्दों पर विचार करना आवश्यक है। अंचल शब्द संस्कृत की अंच् धातु में अलच् प्रत्यय के योग से बना है। भौगोलिक सीमाओं से घिरे हुए जनपद को अंचल की संज्ञा दी जा सकती है। वस्तुतः अंचल शब्द स्थान विशेष का सूचक है। आंचलिक शब्द की संस्कृत व्याकरणानुसार सिद्धि नहीं की जा सकती। अंचल से अंचलीय, अंचलता, अचलत्व आदि शब्दों का निर्माण होना चाहिए किन्तु इन शब्दों की अपेक्षा आंचलिक शब्द सर्वस्वीकृत एवं प्रचलित है। आंचलिकता शब्द भाववाचक है। उपन्यास के संदर्भ में 'आंचलिक' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने अपने प्रथम उपन्यास 'मैला आँचल' की भूमिका में किया है। अनेक विद्वान् समीक्षक 'आंचलिक' उपन्यास को एक स्वतंत्र प्रवृत्ति के रूप में मान्यता देते हैं। दूसरी ओर कतिपय विद्वान् उपन्यासों में 'आंचलिकता' के प्रयोग को आंदोलन का रूप देते हैं। 'आंचलिकता' की प्रवृत्ति आज के साहित्य में अत्यंत सबल है। इस प्रबल प्रवृत्ति की उसी प्रकार पृथक अलग विशिष्टता है, जिस प्रकार सामाजिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक आदि उपन्यासों की है। विद्वानों ने आंचलिक उपन्यास को एक स्वतंत्र साहित्य विधा के रूप में मान्यता दी है।

'आंचलिकता' के स्वरूप निर्धारण, उद्‌घाटन, प्रस्तुतीकरण आदि में अनेक तत्वों का योग निहित है। आंचलिकता को सजीव रूप देने में वे सभी तत्व सम्मिलित किये जा सकते हैं, जो क्षेत्र विशेष के जन–जीवन का सांगोपांग चित्र उकेरते हैं। वस्तुतः वेशभूषा, जीवन–यापन, आर्थिक व्यवस्था, वर्गगत भेदभाव, विश्वास, संस्कार, खान–पान, रहन–सहन आदि सभी उपकरण आंचलिकता के तत्व कहे जा सकते हैं। वस्तुतः अंचल

Scanned with OKEN Scanner

विशेष के निवासियों का सर्वांगीण चित्रण/विश्लेषण 'आंचलिकता' का महत्त्वपूर्ण तत्व है। इसके द्वारा क्षेत्र विशेष के मनुष्यों का दैनिक जीवन, उनके कार्यों, समस्याओं आदि का प्रस्तुतीकरण किया जाता है। आंचलिकता के लिए लोकतत्व का संस्पर्श अत्यंत आवश्यक है। डॉ. सत्येन्द्र ने लोकतत्व को लोक–मानस की अभिव्यक्ति से सम्बद्ध करते हुए उसके विकस की पाँच सीढियां मानी हैं– सभ्यता विरहित जंगली जातियाँ, सभ्यता विरहित अनपढ ग्रामीण समाज, सभ्यता विरहित निरक्षर नगर–समाज, अर्द्ध सभ्य, अर्द्ध–शिक्षित नगर समाज, सभ्य समाज। इस प्रकार लोकतात्विक स्पर्श आंचलिकता के प्रकटीकरण में सहायक सिद्ध होता है।

'आंचलिक' और आंचलिकता–प्रधान उपन्यासों में अंतर निहित है। आंचलिक उपन्यासों में सर्वागीणता का भाव प्रबल होता है। 'आंचलिकता प्रधान उपन्यासों में सर्वागीण चित्रण का अभाव है। इस दृष्टि से प्रेमचंद के उपन्यासों में 'ग्राम्य चित्रण' को आंचलिक नहीं कहा जा सकता क्योंकि वे ग्रामों का सामान्य चित्रण प्रस्तुत करते हैं किसी क्षेत्र विशेष की सभ्यता व संस्कृति के चित्रण में अनेकानेक वस्तुओं का समावेश होता है। किसी स्थान विशेष की सभी विशेषताओं को दिखाने के लिए सामाजिक सम्बन्धों, रीति–रिवाज व खान–पान आदि भौगोलिक विशिष्टताओं, जीविकोपार्जन के साधनों एवं आषा आदि की विलक्षणताओं का वर्णन किया जाना ही वातावरणीय तत्व है। स्थानीय रंगत आंचलिक उपन्यासों को रोचक व हृदयग्राही बनाती है। भाषा के माध्यम से आंचलिकता की अभिव्यक्ति सहज व स्वाभाविक रूप से होती है। यथार्थ भाषा अपने ग्रामीण शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों, उक्तियों आदि के द्वारा आंचलिकता को अभिव्यक्त करने में समर्थ है। इसके लिए लोकतत्व का संस्पर्श अत्यंत आवश्यक है।

आंचलिकता प्रधान उपन्यासों में आंचलिकता का संस्पर्श किसी एक भूभाग के विशिष्ट जीवन का सम्पूर्ण चित्रण नहीं होता जबकि आंचलिक उपन्यासों में विशिष्ट अंचल का सम्पूर्ण चित्रण होता है। आचार्य नंददुलारे वाजपेयी के मतानुसार, वस्तुतः आंचलिक उपन्यास आज के उपन्यासों की एक शक्तिशाली परिणत पद्धति है, वह हिन्दी उपन्यास का नवीनतम विकास है। आंचलिक उपन्यासों को चारित्रिक–उपन्यास कहना सर्वथा अनुपयुक्त है, क्योंकि आंचलिक उपन्यासों में चरित्र–चित्रण की अपेक्षा वातावरण पर अधिक ध्यान रहता है। उपन्यास साहित्य की नवीनता और साहित्यिक प्रगति को लक्ष्य में रखकर डॉ. ओमानंद सारस्वत ने 'नये उपन्यासों' की दृष्टि से पाँच वर्गों की चर्चा की है। उनमें लघु उपन्यास, आंचलिक उपन्यास, नायकहीन उपन्यास, सहकारी उपन्यास और कथाहीन उपन्यास माने गए हैं। स्पष्टतः उन्होंने आंचलिक उपन्यास को स्वतंत्र साहित्यिक विद्या के रूप में प्रतिष्ठा देकर नयी प्रवृत्ति के अंतर्गत ग्रहण किया है। आंचलिक उपन्यास जनपदीय जीवन का चित्रण प्रस्तुत करता है। यह चित्रण जितना सूक्ष्म और तलस्पर्शी होगा, आंचलिक उपन्यासकार उतना ही कृतकार्य होगा।

डॉ. राधेश्याम कौशिक के अनुसार जिन उपन्यासों में किसी विशिष्ट प्रदेश के जनजीवन का समग्र बिम्बात्मक चित्रण हो, उन्हें आंचलिक उपन्यास कहा जाता है। 'मैला आंचल' की भूमिका में फणीश्वरनाथ रेणु की परिभाषा विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यथा– यह है मैला आंचल, एक आंचलिक उपन्यास। कथानक है पूर्णिया। पूर्णिया बिहार राज्य का एक जिला है.... मैंने इसके एक हिस्से के एक ही गाँव को पिछड़े गाँव का प्रतीक मानकर– इस उपन्यास का कथा–क्षेत्र बनाया है। इसमें फूल भी हैं शूल भी, धूल भी है, गुलाब भी, कीचड़ भी है चंदन भी, सुंदरता भी है कुरूपता भी। मैं किसी से भी दामन बचाकर निकल नहीं पाया। स्थूल रूप से आंचलिक उपन्यास के प्रमुख तत्व किसी विशिष्ट अंचल की भौगोलिक स्थिति, कथानक का आंचलिक आधार

और उसकी क्षीणता, चरित्र विकास में अंचल का योग, वातावरण नायकत्व के रूप में, भाषा, संवाद और शैली में आंचलिक संस्पर्श,आंचलिक वातावरण और स्थानीय रंग, अंचल की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति का चित्रण, लोक तत्व, आंचलिक संस्कृति का उद्‌घाटन, जातीय भिन्नता में एकता के दर्शन, जन–जागरण की दिशाओं का संकलन, विशिष्ट लोकोन्मुखी दृष्टिकोण।

वस्तुतः आंचलिकता एक दृष्टि है। डॉ. ज्ञानचंद गुप्त के शब्दों में 'आंचलिक उपन्यास की आंतरिक अन्विति बहुस्तरीय एवं संश्लिष्ट होती है। उसकी परस्पर लिपटी तहों में गुंथे हुए प्रसंग, घटनावलियाँ, मनोस्थितियों के आवर्त अपने पारस्परिक रचाव में सारी विद्रूपता एवं जटिलता को उपन्यास में द्योतित करते हैं।' आंचलिक उपन्यासों में आंचलिक भाषा भिन्न–भिन्न अंचलों के अनुसार प्रयुक्त की जाती है। पूर्णिया जिले की भाषा का प्रयोग 'मैला आंचल' में, मध्य प्रदेश के बस्तर की आदिम जातियों की भाषा का प्रयोग 'जंगल के फूल' में, मछुओं की बम्बइयां मराठी का प्रयोग 'सागर, लहरें और मनुष्य में देखा जा सकता है। यहाँ उल्लेखनीय है कि आंचलिक उपन्यासों में 'नायक' का मोह नहीं मिलता। ऐसा लगता है कि वहाँ सम्पूर्ण अंचल ही नायक है। उदाहरणार्थ 'बहती गंगा' में कोई भी व्यक्ति नायक के रूप में नहीं उभरता, वहाँ तो एक पूरा नगर ही नायक नजर आता है। अधिकांश आंचलिक उपन्यासों की शैली वर्णनात्मक है। आंचलिक उपन्यासों में किसी अंचल की सजीवता के लिए स्थान, संवाद, वातावरण, प्रसंग परिस्थिति आदि के वर्णन में प्रादेशिकता का प्रभाव रहता है। उदाहरणार्थ 'कबूतरखाना' में महाराष्ट्र प्रदेश की मराठी बोली का, 'बलचनमा में बिहार प्रदेश की बोली का, 'देवताओं के देश में पर्वतीय प्रदेश की पर्वतीय भाषा का, 'चिट्ठीरसैन' में कूर्माचल की भाषा की झलक दिखाई देती है। कई आंचलिक उपन्यासों में लोकविश्वासों का वर्णन मिलता है। जैसे–भूत, प्रेत, जादू, टोने, टोटके, अंधविश्वास, शकुन, अपशकुन, भाग्य, संस्कार, त्यौहार, व्रत, कथा, ज्योतिष, ग्रह योग आदि। उदाहरणार्थ 'पानी के प्राचीर' में भूत के भय का चित्रण इसी प्रकार का है। आंचलिक उपन्यासों में लोक संस्कृति, लोककथा, लोकगाथा, लोकगीत, लोक आख्यान, लोक नृत्य, लोकनाट्य, लोक परम्परा, लोक प्रवाह, लोककथा, लोकभाषा, लोकवार्ता, लोक साहित्य आदि का विस्तृत रूपायन हुआ है। अधिकांश आंचलिक उपन्यासों में मेले का वर्णन प्राप्त होता है। बलवंत सिंह के 'दो आकागढ़' तथा रामदरश मिश्र के 'जल टूटता हुआ' उपन्यासों में मेलों का सजीव चित्रण हुआ है।

आंचलिक वातायन से सम्पृक्त कतिपय आंचलिक उपन्यासों का नामोल्लेख करना उचित होगा। यथा– 'अलग–अलग वैतरणी' (शिव प्रसाद सिंह), 'आधा गाँव' (राही मासूम रजा) 'इमरतिया' (नागार्जुन), 'उग्रतारा' (नागार्जुन) 'एक मोठ सरसों' (शैलेश मटियानी), 'कब तक पुकारूँ' (रांगेय राघव), 'कबूतरखाना' (शैलेश मटियानी), 'गंगा मैया' (भैरव प्रसाद गुप्त), 'चिट्ठी रसेन' (शैलेश मटियानी), 'जल टूटता हुआ' (रामदरश मिश्र), 'झांसी की रानी लक्ष्मीबाई' (वृंदावन लाल वर्मा), 'देहाती दुनिया' (शिव पूजन सहाय), 'पानी के प्राचीर' (रामदरश मिश्र), 'बलचनमा' (नागार्जुन), 'माटी की महक' (सच्चिदानंद धूमकेतु), 'बाबा बटेसरनाथ' (नागार्जुन), 'राग दरबारी' (श्रीलाल शुक्ल), 'सागर, लहरें और मनुष्य' (उदयशंकर भट्ट), 'सूखता तालाब' (रामदरश मिश्र), 'हौलदार' (शैलेश मटियानी), 'दूसरा आंचल' (सूर्यदीन यादव)।

वस्तुतः 'आंचलिकता' शब्द आंचलिक उपन्यास आंचलिक विशेषताओं की ओर संकेत करता है। 'आंचलिकता' को नयी शब्दावली में 'आंचलिक यथार्थ' कह सकते हैं। रसवादी दृष्टि से कहना हो तो 'आंचलिक

Scanned with OKEN Scanner

रस की संज्ञा दी जा सकती है। आधुनिकता के घेरे में हम इसे 'आंचलिक बोध' संजित कर सकते हैं। कहने का भाव यह है कि 'आंचलिकता' को यथार्थ, रस या बोध आदि किसी भी रचनात्मक प्रतिफलन की दृष्टि से ग्रहण किया जा सकता है। कथावस्तु के चुनाव, पात्रों की भाषा, संवाद योजना, गीत संयोजन, शब्द–चित्र, ध्वनि संकेत आदि का समावेश आंचलिक उपन्यासों में सहजता से किया गया है। आंचलिक उपन्यासों में 'देशकाल' या 'वातावरण' नामक तत्त्व का विशेष महत्त्व है। वस्तुतः आंचलिक उपन्यास लोक संस्कृति के सफल प्रस्तोता हैं।

Scanned with OKEN Scanner